

कुहू

माता पिता का वह इकलौता बेटा था। तीन बहनें उससे बड़ी थीं। हमलोग उसके पड़ोस में रहते थे। उसके लालन-पालन को देखकर बचपन से ही उससे मैं ईर्ष्या करता था। वह मुझसे पांच साल छोटा था पर उसे वो सारी सुविधाएं और वस्तुएँ उपलब्ध थीं जिसकी चाह प्रायः हर बच्चे को होती है। उसके पास खेलने को महंगे खिलौने थे... पहनने को एक-से-एक आधुनिक पोशाक... पढ़ने को तरह-तरह की पत्रिकाएँ और ढेरों कहानी की किताबें थीं। तब उनके पास अंग्रेजी-हिंदी का शब्दकोष हुआ करता था, जो उन दिनों खास लोगों के पास ही होता था। कभी कभार कुछेक घंटों के लिए मैं उनसे मांग कर उपयोग में लाता था। परंतु समय पर वापस नहीं करने पर अगली बार किसी न किसी बहाने उनकी माँ किताबें देने से मना कर देती। बचपन से ही उसे सभी सहूलियतें मिली थी। कम आय के बावजूद उसके पिता उसकी तमाम जायज़ और नाजायज़ ज़रूरतों को पूरा करने में खुशी का अनुभव करते। जिसकी भरपाई बहनों से होती। उनकी आम ज़रूरतें ही पूरी नहीं होती। एक जोड़ा कपड़ा में दिन निकालते। पढ़ने-लिखने के लिए पर्याप्त किताबें और कापियाँ नहीं होती। लड़कियां पढ़-लिख लें इसकी चिंता माँ-बाप को कतई नहीं थी। लड़कियां घर के काम काज में लगी रहतीं और माँ-बाप बेटे की देखभाल में। दोनों बड़ी बहनों की पढ़ाई पाँचवी-छठी तक में ही सिमट कर रह गई। उन्हें इसकी कोई शिकायत नहीं थी बल्कि उनलोगों ने तो छोटी उम्र से ही झाड़ू-पोछा से लेकर चौका-बर्तन तक सभी काम में अपने आप को ढाल लिया था। घर का सारा काम संभाल लिया था बल्कि ऐसा करने पर उन्हें बाध्य किया गया था क्योंकि नौकर-चाकर को तो खर्च में कटौती के लिए हटाया जा चुका था। तकलीफों का कठोर प्रहार बहनों को सहना पड़ा था।

लेकिन सबसे अधिक अवहेलना की शिकार हुई थी तो वह थी कुहू। बस इस कारण कि उसे बचपन से ही पढ़ाई-लिखाई में बेहद दिलचस्पी थी। घर के काम-काज से उसे न कोई लगाव था और न ही कोई इच्छा। वह दिन भर पढ़ने-लिखने में ही लगी रहती जिसका खामियाजा उसे माँ की डांट-फटकार से भुगतना पड़ता था। माँ से डांट पड़ती... कहती, क्या कर लेगी पढ़-लिख कर। लड़की जात है कुछ भी कर लो चूल्हा चौका में सिमट कर रह जाएगी। बेहतर है अभी से घर-गृहस्थी का काम समझ ले, नहीं तो बाद में पछताएगी। फिर न कहना माँ ने यह सब सिखाया नहीं था। कभी कभी मार भी पड़ती थी। बड़ी दोनों बहनें काम करती थी इसलिए उन्हें मार नहीं पड़ती थी। ये सब बातें उसके मानस पटल पर इस तरह रच-बस गई थी कि बरसों बाद आज जब मैं उससे मिला तो आग बबूला हो कर अपनी भड़ास निकालने लगी। दरअसल उसकी बड़ी बहन की शादी में शरीक होने में आया था। इधर-उधर की बातों के बाद जब मैंने संतु के बारे में जानने की इच्छा ज़ाहिर की तो वह भड़क गई। अनाप-सनाप बकने लगी। कहते-कहते आवेश में क्या-क्या कह गई....तीसरी बेटा के रूप में पैदा होना जैसे मेरे लिए एक कलंक था... शायद माँ-बाप की इच्छा के विरुद्ध मैं पैदा हो गई। एक साल के बाद ही संतोष पैदा हुआ था। बेटे के आते ही घर पर रौनक का माहौल बन गया था। माँ-बाप का उसके प्रति ज़रूरत से ज्यादा लाड़-प्यार से कुहू असहज महसूस करती। अपने आप को माता-पिता की नज़रों में हमेशा तिरस्कृत पाती। अपने प्रति माँ के भेद-भाव को तब वह भली-भांति समझने लगी थी। कुहू के पैदा होते ही गुस्से से पिता ने भगवान जी के फोटो को नदी में फेंक कर घर में पूजा-पाठ पर रोक लगा दी थी, ऐसा बताते हुए वह फूट-फूट कर रो पड़ी थी। संतु के आते ही भगवान जी को घर पर फिर से प्रतिष्ठित किया गया और घर में पूजा-पाठ का क्रम फिर से शुरू हो गया। ऐसा उसने सुना था। और भी उसने बताया कि किस तरह खाने-पहनने में उनकी माँ उनके साथ भेदभाव किया करती थी... “सुबह नाश्ते में अक्सर हम बहनों के लिए बासी रोटी होती थी और संतु के लिए परांठे और मक्खन। दूध, दही, फल वगैरह के लिए तो हम तरस

ही जाते थे। संतु के खाने के बाद अगर कुछ बचता, तो ही हमें नसीब होता था। एक जोड़ा स्कूल के कपड़ों से हफ्ता निकाल देते थे... पसीने की बदबू आती थी, सहेलियां फब्तियां कसती थीं जब कि संतु के पोशाक हमेशा लॉन्ड्री से धुले हुए होते थे। इस्तरी वाले पोशाक हम बहनें सिर्फ किसी खास अवसर पर, जैसे गणतंत्र दिवस या स्वतंत्रता दिवस पर ही पहनते थे जिसके लिए हम शाम को स्कूल के बाद खुद अपने कपड़े धोते और पंखों के नीचे सुखाते... बड़ी दीदी इस्तरी कर देती। कभी कभी कपड़े सूख नहीं पाते और गीले कपड़ों में ही स्कूल जाना पड़ता था... और वही संतु... जिसे माँ-बाप ने सिर पर बिठा रखा था, आज... ” कहते कहते फफक कर रो पड़ी। कुहू की इन बातों से कुछ पता चले या न चले इतना तो स्पष्ट हो गया कि संतु के किसी गैर-जिम्मेदाराना आचरण से उसे गहरा आघात पहुंचा है और वह मर्माहत है। ऐसे वक्त में मैंने उसे कुरेदना उचित नहीं समझा। उसे ढाढ़स बँधा कर शांत कराया।

शादी में काफी लोग बाग थे पर न जाने क्यों चहल-पहल में कमी कहीं न कहीं मुझे आशंकित कर रही थी। मैं दस साल बाद इस परिवार से मिल रहा था। दसवीं के बाद पिताजी का तबादला हो गया और उसके बाद कभी कोई ऐसा अवसर नहीं आया जबकि हम मिलते। कुहू से कॉलेज में बातचीत हो जाती थी... पर सीमित रूप से। कई पुराने मित्रों से मुलाकात हुई। उन लोगों से ही संतु के बारे में जानकारी मिली और उसकी अनुपस्थिति का कारण स्पष्ट हो गया।

दरअसल कॉलेज में फर्स्ट ईयर के दौरान संतु पिंगी के प्रेम-पाश में फंस गया जिसका कुहू ने ऐतराज जताया था। क्योंकि कुहू पिंगी के चरित्र से भली-भाँति परिचित थी।

पिंगी कुहू की हमउम्र थी। दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे। पिंगी को नृत्य में रुचि थी। वह बचपन से ही कथक में शिक्षा प्राप्त कर रही थी और निरंतर साधनारत थी। स्कूल हो या कॉलोनी... सभी सांस्कृतिक कार्यक्रम में नृत्य परिवेषण के लिए उसे विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता था। दर्शक उसकी नृत्य भंगिमा से काफी प्रभावित होते थे। उसे काफी सराहना मिलती। उसकी यह प्रसिद्धि शहर से बाहर भी थी। नृत्य के सिलसिले में उसे अपने ग्रुप के साथ शहर से बाहर भी जाना पड़ता था।

कुहू और पिंगी दोनों अच्छी सहेली हुआ करती थी। एक दूसरे के घर दोनों का आना जाना था। एक साथ पढ़ना-लिखना तथा घूमना फिरना भी था। उसके कई बॉयफ्रेंड हुआ करते थे जो शायद, पिंगी के अनुसार नृत्य से ही जुड़े थे। इसलिए कुहू उनसे अपरिचित थी और न ही वह उन्हें जानना चाहती थी। स्कूल जाते हुए या कभी शाम को टहलते हुए उन मित्रों में से कोई न कोई पिंगी से मिलने आ जाता था। कई बार कुहू को उनके मिलने जुलने का ढंग अच्छा नहीं लगता। वह पिंगी से इसकी शिकायत भी करती पर वह किसी न किसी बहाने सब कुछ टाल जाती। कई बार तो वह रात-रात भर घर से बाहर रहती पर अपने घर पर बता कर आती कि वह कुहू के घर जाएगी, गणित का अभ्यास करने। कभी कभी तो किसी कार्यक्रम के लिए नृत्य का अभ्यास करने का बहाना बना कर रात भर घर से नदारद रहती। उसकी माँ के पूछने पर कुहू वैसा ही बताती जैसा कि उसे पिंगी के द्वारा कहने को कहा जाता। उसके लिए कुहू को अकारण ही झूठ बोलना पड़ता था जो उसके विवेक के विपरीत था। उन लड़कों के चाल-चलन पर उसे शक होने लगा। यकीनन ये आवारा लड़के ही थे जिनसे पिंगी का मेलजोल था। पूछने पर पहले तो उसने आनाकानी की पर असलियत का पता चलते ही फौरन कुहू ने उससे दूरी बना ली। फिर भी पिंगी कहीं न कहीं किसी रेस्तरां में, पार्क में या सड़क पर किसी पेड़ की आड़ में लड़कों के साथ मटरगश्ती करते दिख ही जाती। कभी किसी के साथ तो कभी कोई और होता था। मुक्त आसमान में चिड़िया अपने पंख फैला कर उन्मुक्त उड़ रही थी... न कोई निर्दिष्ट दिशा थी न ही कोई गंतव्य मंजिल।

अब संतु की बारी थी। वह भी पिंगी के कलुषित चंगुल से वंचित नहीं हो पाया। संतु पिंगी पर फिदा हो चुका था। सरेआम दोनों का मिलना जुलना होता था। पिंगी के साथ संतु का मेलजोल कुहू को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं था।

क्योंकि पिंकी की कोई भी बात उससे छिपी तो थी नहीं। कुहू नहीं चाहती थी कि उसका भाई पिंकी के साथ रह कर बिगड़ जाए। उसकी पढ़ाई में कहीं बाधा न सृष्टि हो। जब कुहू ने अपनी कड़ी आपत्ति जताई तो संतु अनायास ही आवेश में आ गया और अपनी बहन को भला-बुरा कह डाला। तमतमाए चेहरे से अपनी बहन को संकीर्ण मानसिकता से ग्रसित बताया और यह भी कह डाला कि वह पिंकी की प्रसिद्धि से जलती है।

संतु के विवेकहीन शब्दों से विचलित हुए बिना कुहू ने स्वयं को शांत और संयत रखा। चाहती तो वह भी उसे उसके ही अंदाज़ में जवाब दे सकती थी... संतु को स्पष्टतया कहना चाहती थी, “गर्लफ्रेंड या बॉयफ्रेंड का होना हर किसी का निजी मामला है। किसी को उसमें हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। फिर किसी के तुम्हारी गर्लफ्रेंड होने से मुझे कोई शिकायत या परेशानी क्यों होगी भला। दरअसल परेशानी की बात यह है कि पिंकी की बुरी संगति से उसे ऐतराज है।” पर मानसिक परिपक्वता का परिचय देते हुए उसने चुप रहना ही उचित समझा। क्योंकि उसे विश्वास था कि जल्दी ही पिंकी अपने आदतन संतु को भी अपने हाल पर छोड़ कर किसी और को फंसा लेगी। आखिर हुआ भी वही। संतु को ठुकरा कर वह पैसों के लिए किसी और के साथ अठखेलियाँ करने लगी थी। पर एक पागल प्रेमी की तरह संतु अपने आप को पिंकी से अलग होने की बात तक सोच नहीं सकता था। वह पिंकी के पीछे हाथ धो कर पड़ गया। उसने दाढ़ी-वाढ़ी बढ़ा ली तथा पिंकी के इर्द-गिर्द चक्कर काटने लगा ताकि पिंकी उस पर तरस खा कर फिर से दोस्ती का हाथ बढ़ा ले। पर पिंकी तो पुरानी खिलाड़ी निकली। उसने अपना बहु-परीक्षित नुस्खा आजमाया। नतीजतन संतु चोटिल अवस्था में अस्पताल के बेड पर कराहता मिला। इन सब बातों के बावजूद अपनी बहन के साथ उसका संबंध बिगड़ा ही रहा।

संतु का अनधिकृत रूप से पिंकी के निजी जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप पिंकी और उसके बॉयफ्रेंड को गवारा नहीं हुआ। संतु से छुटकारा पाने के लिए पिंकी और उसके बॉयफ्रेंड ने कोर्ट मैरिज कर ली। इसमें शायद उसके बॉयफ्रेंड की ही पहल रही होगी। अब तो संतु पढ़ाई वगैरह छोड़ कर पागलों की तरह भटकने लगा। शराब की लत लग गई थी। घर पर कभी कभार ही आता था। उसकी बदहाली पर घर के सभी सदस्य व्यथित थे। जिस लड़के को माँ-बाप ने बेटियों की सामान्य आवश्यकताओं को अनदेखी कर लाड़-प्यार से पाला पोसा, उसकी परवरिश में कोई कसर नहीं छोड़ी आज वह दर-ब-दर भटक कर निरुद्देश्य जी रहा है। किस माँ-बाप से यह सब सहन होगा। घर पर पहली शादी थी और घर का इकलौता बेटा इस खुशी के अवसर पर उपस्थित नहीं था। खुशी के माहौल के विपरीत वहाँ मातम पसरा था।

संतु कुछेक साल यूँ ही गुमशुदा रहा। वह यूँ कि आखिरी बार जब वह घर आया था और माँ-बाप ने उसकी शादी की बात चलाई थी तो उसने साफ मना कर दिया था। कहा था कि वह शादी नहीं करेगा और अगर करेगा भी तो किसी विधवा से करेगा। शादी और विधवा से... ऐसे बेटुका लगने वाले प्रस्ताव पर किसी की सहमति नहीं थी। पहले कुहू ने ही अपना विरोध जताया था, माता-पिता ने बस कुहू के निर्णय पर हामी भरी थी। पर उनके अंदर की सुगबुगाहट किसी से छिपी नहीं थी। आखिर बेटा जो ठहरा। दरअसल उन्हें अपने बेटे के द्वारा लिए गए निर्णय को किसी क्रांतिकारी कदम से कम नहीं सूझा। पर खुल कर कुछ कहने से बचे रहे। वे कुहू के विरुद्ध जाकर उसे नाराज नहीं करना चाहते थे। कुहू ही तो एकमात्र सहारा थी। वैसे भी दोनों बड़ी बहनें शादी के बाद ससुराल में थीं। संतु अपने निर्णय पर अडिग रहा। जाते जाते संतु ने इसे अपना अंतिम फैसला बताते हुए दृढ़ता से कहा कि चाहे कुछ भी हो वह ऐसा कर दिखलाएगा। संतु के मुँह से विधवा विवाह वाली बात सभी के समझ से परे थी। संतु चला गया। किसी ने भी उसे ढूँढने का प्रयास नहीं किया। सुनी सुनायी खबर थी कि आजकल वह हरिद्वार के किसी आश्रम में रह रहा है और योग शिक्षा दे रहा है। इस बात से पता नहीं क्यों मुझे बड़ा सुकून मिला। मुझे महसूस हुआ कि शायद अब संतु सुधर गया है। अन्यथा विधवा से विवाह की बात उसके मन में क्यों आया। ऐसा लगा कि वह आध्यात्मिक

सोच रखने लगा है। समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध पहल कर रहा है। उसमें मुझे समाज-सुधारक की छवि नज़र आने लगी। उससे मिलने की तीव्र उत्कंठा मेरे मन में जागृत अवश्य हुई पर सिर्फ मन मसोस कर रहना पड़ा। सिवा इसके मेरे पास कोई उपाय नहीं था।

बूढ़े माँ-बाप के साथ अकेली कुहू रह गई। अपने माँ-बाप को साथ लिए इलाहाबाद आ गई। वहाँ कॉलेज में अध्यापन का कार्य कर रही है। कुहू को दुःख इस बात की थी कि माँ-बाप की हर खुशी का ध्यान रखते हुए भी बेटी के लिए उन्हें कोई फिक्र न थी। बल्कि बात-बात में संतु को याद कर वे परेशान होते। इसी सदमे में पिता का स्वर्गवास हो गया। संतु का कोई ठिकाना नहीं था। उसे यह खबर नहीं दी जा सकी। मैं पहुँच गया था।

कुहू की माँ को अब पति को खोने का गम सताने लगा था। वह कुछ अधिक ही बेचैन रहने लगी थी। उसे शायद यह आशंका थी कि कुहू शादी कर लेगी तो उसका क्या होगा, कहाँ रहेगी। इस संशय से तो वह शायद पति के रहते हुए भी ग्रस्त थी। लेकिन कभी खुलासा नहीं किया था। आजकल उसके हाव-भाव से कुहू समझने लगी है। कभी-कभार तो अनायास ही इशारे इशारे में अस्पष्ट-सा कुछ कह जाती है। अब पहले की तरह कोसती नहीं। बचपन में बात-बात पर कोसती थी। पढ़ने-लिखने में बाधा पैदा करती थी। कितनी छोटी सोच थी कि बेटा पढ़-लिख कर माँ-बाप के बुढ़ापे का सहारा बनेगा। बेटी पढ़ेगी तो क्या कर लेगी आखिर ससुराल ही तो जाएगी। अपने माँ-बाप के लिए तो पराई ही होगी... तभी तो बचपन से ही कुहू ने अपने घर में भी पराई होने जैसे दुखद घड़ियों को जीया है। बचपन से ही उसे पढ़ने की जिद रही है। अनुकूल परिवेश नहीं होने के बावजूद भी उसने पढ़ाई जारी रखी। बच्चों को ट्यूशन पढ़ाती और उन्हीं पैसों से पढ़ाई का खर्च निकालती। एमए के बाद अध्यापन में आ गई। साथ-साथ पीएचडी कर रही है। अपनी सामर्थ्य पर हर लक्ष्य को हासिल किया है उसने। दोनों बहनों की शादी में हाथ बंटाय़ा अन्यथा उसके पिताजी की आमदनी ही कितनी थी। अपने दायित्व से कभी मुंह नहीं मोड़ा। अब इस हालत में माँ को छोड़ अपनी शादी की बात कैसे सोच सकती थी वह।

बचपन से ही हम एक-दूसरे को चाहने लगे थे। बड़े हुए तो बड़ी सादगी से मिलते थे। रिश्ते को निभाने में शुरू से हमने अपनी वैचारिक परिपक्वता का परिचय दिया। हमने कभी ऐसी कोई फूहड़ हरकत नहीं की जिससे हमारे संबंध की भनक भी किसी को पड़ती। हमदोनों के रिश्ते की बात सिर्फ हम ही जानते थे। हम एक-दूसरे की तकलीफों और मजबूरियों को बखूबी समझते थे। किसी ने भी कभी कोई जल्दीबाजी नहीं दिखाई। तभी तो हमारे संबंध दृढ़ थे।

कुहू ने बताया कि एक दिन अचानक संतु माँ को लेने आ गया। उसने शादी कर ली थी। यही बताया था उसने माँ को। माँ तो जैसे बेटे के इंतज़ार में बिलकुल तैयार बैठी थी। बेटे के साथ ऐसी गई मानो अचानक नियत समय से पूर्व किसी कैदी की सज़ा माफ कर दी गई हो। ऐसा लगा जैसे वह यहाँ कैदी का जीवन बसर कर रही थी और छुटकारा मिलते ही भाग खड़ी हुई। कुछ कह कर भी नहीं गई। मैं उसे जाते हुए देखती रह गई। मुड़ कर भी पीछे नहीं देखा था उसने। उसके यहाँ से चले जाने के बाद अकेली कैसे रहूँगी, पूछा तक नहीं। दस वर्ष की मेरी तपस्या और बलिदान एक पल में भंग हो गई। मानो इस युग में लड़की के रूप में जन्म लेना ही पाप है। रो-रो कर कुहू का बुरा हाल था। उसे ढाढ़स देने वाला कोई भी साथ नहीं था। उसके अनुरोध पर संतु एक पर्ची में अपना पता छोड़ गया था।

अचानक एक दिन उसने मुझे आने को कहा। आनन-फानन में हम दोनों ने आर्य समाज विधि से शादी कर ली। सिर्फ मेरे घर के लोग शादी में उपस्थित थे। कुहू ने किसी को भी नहीं बुलाया था। माँ, बहनें और भाई किसी को भी नहीं। जब किसी को उसकी फिक्र नहीं है तो वह क्यों उन्हें बुलाए। उनलोगों के प्रति कुहू के मन में रोष पैदा होना मुझे स्वाभाविक लगा। मेरे घर के लोग इस शादी से बेहद खुश लगे।

कई महीने बीत गए। पता नहीं अचानक कुहू को माँ की याद आने लगी। हम दोनों ने उनसे मिलने का मन बनाया। हरिद्वार के किसी आश्रम का पता बताया था। जब हम वहाँ आश्रम में पहुँच कर संतु के बारे में पूछताछ कर रहे थे तो मैली-कुचैली साड़ी में लिपटी एक दुबली सी वृद्धा कुहू से लिपट कर रोने लगी। वह माँ हो सकती है हमने कल्पना भी नहीं की थी। सूख कर कांटा हो चुकी थी। पहचानना मुश्किल हो रहा था। माँ की हालत पर कुहू भी बिलख कर रोने लगी थी। उन्हें शांत कराया। माँ हमें उनके घर पर ले गई। संतु नहीं था और न ही उसकी पत्नी। वे कई दिनों से शहर से बाहर किसी योग शिविर में गए हुए थे। माँ ने बताया कि महीने में बीस दिन वे लोग घर से बाहर रहते हैं। माँ की बदहाली का कारण समझते हमें देर नहीं लगी। वहाँ दीवार पर टंगी फोटो में संतु के साथ पिकी थी। पिकी के पूर्व पति की संदेहात्मक मृत्यु में हत्या की जो आशंका जताई जा रही थी उसकी सत्यता की आधिकारिक पुष्टि तो नहीं हो पाई थी। पर संतु को जिस विधवा-विवाह की बात पर ज़िद थी, उसके पीछे की कहानी स्पष्ट हो गई। करीब घंटा भर रहने के बाद जब हम निकलने लगे तो माँ एक साफ साड़ी में तैयार हो कर बड़ी आतुरता से कुहू के चेहरे पर उभरते प्रतिक्रिया को उत्सुकता भरी निगाहों से टोह रही थी। कुहू ने विनम्र आँखों से मेरी सहमति मांगी थी।

माँ को साथ लेकर हम वहाँ से वापस आ गए।

*